कहानी क्यों ?
कहानियाँ और समझ के विभिन्न आयाम

अनीता ध्यानी

प्राथमिक कक्षाओं में भाषा की पढ़ाई के दौरान कहानी और कविता विधा को एक महत्त्वपूर्ण अवयव के तौर पर देखा जाता रहा है। प्रस्तुत लेख में लेखिका ने बच्चों के साथ कुछ कहानियों पर किए गए कार्य के अनुभव प्रस्तुत किए हैं। इन अनुभवों के आधार पर यह बताने की कोशिश की गई है कि बच्चों के जीवन में कहानी क्या-क्या करती है, बच्चे किस तरह की प्रतिक्रियाएँ देते हैं, कहानी पर कैसे काम किया जाए और किन बातों पर विशेष ध्यान दिया जाए? लेख कहानी सुनाने-पढ़ने से जुड़ी कुछ मान्यताओं पर भी सवाल रखता है। सं.

जब मैं विद्यार्थी थी तब भीष्म साहनीजी की एक कहानी पढ़ी थी, जिसका शीर्षक था 'अहम् ब्रह्मास्मि'। इस कहानी का पात्र अँग्रेज़ीयत को पसन्द करता था। लेकिन एक दिन अँग्रेज़ों द्वारा उसे शौचालय से धक्के मारकर व गाली देकर बाहर निकाला जाता है क्योंकि वह अश्वेत था। शाम को घर लौटकर वह ज़ोर से अपनी मुट्ठियाँ भींचता है और आँखें बन्द करके ज़ोर-ज़ोर से कहता है, 'अहम् ब्रह्मास्मि'। ठीक से याद नहीं है कि ये कहानी मैंने हाईस्कूल में पढ़ी या इन्टर में, लेकिन उस समय तो कहानी से मैं इतना ही समझ पाई थी कि अँग्रेज़ रंगभेद करते थे। इसलिए ही उस अश्वेत को धक्के देकर निकाल दिया होगा और क्योंकि वह अश्वेत था उसे ये बात बुरी लगी। लेकिन उस घटना के बाद उसका मुट्ठियाँ भींचकर 'अहम् ब्रह्मास्मि' बोलने का क्या कारण रहा होगा? ये मेरी समझ से परे था। डर और हिचक के कारण शिक्षकों के सामने अपनी बात रखना मुश्किल काम था तो उनसे भी नहीं पूछा। यह बात मेरे अन्दर एक प्रश्न बनकर अंकित रही कि क्यों वह पात्र 'अहम् ब्रह्मास्मि' शब्द को बार-बार दोहराता है। उसके बाद उस कहानी को पढ़ने का संयोग नहीं बना। लेकिन बहुत सालों बाद मैं उसका मन्तव्य ख़ुद से ही समझी। अब मुझे लगता है, 'अहम् ब्रम्हास्मि' कहकर वह अपने अन्दर भरी हीन भावना को कम करने का प्रयास कर रहा होगा। उस समय का यह अनुभव शिक्षिका बनने के बाद भी याद रहा, और मैंने कोशिश की कि बच्चों पर कहानी, कविता के हमारे द्वारा तय अर्थ और हमारी समझ न थोपी जाए बल्कि इन्हें केवल भाषा सीखने के लक्ष्य के रूप में ही उपयोग में लाया जाए।

इसी प्रकार यह भी ज़रूरी नहीं कि सभी बच्चे कहानी को एक ही तरह समझेंगे और उससे एक जैसी चीज़ें ही ग्रहण करेंगे। कहानी सुनने के बाद बच्चे उसमें से क्या ग्रहण करें ये उनपर ही छोड़ देना उचित होगा। इसका एक उदाहरण मेरे अनुभव से इस प्रकार है :

एक बार कक्षा 2 के बच्चों को ख़रगोश और कछुए की दौड़ वाली कहानी सुनाई गई। इस कहानी में कछुए की जीत होती है। कहानी के अन्त में बच्चों से प्रश्न किया गया कि बताओ दौड़ में ख़रगोश से कछुआ कैसे जीता? उस समय उस कक्षा में 14 बच्चे थे जिनमें कुछ बच्चे शान्त रहे, अधिकतर ने कहा कि कछुआ इसलिए जीता क्योंकि वह चलता रहा

रुका नहीं। किन्तु एक बच्चे निखिल का जवाब अलग था उसने कहा, क्योंकि ख़रगोश सो गया था। जवाब किसी का भी ग़लत नहीं था। यदि ख़रगोश सोता नहीं तो चाहे कछुआ निरन्तर चलता क्या, दौड़ता भी रहता तो भी ख़रगोश से नहीं जीत सकता था। सोच और समझ सबकी भिन्न होती है।

मेरा एक और अनुभव जिसमें एक बच्ची सभी बच्चों को अपने दृष्टिकोण से चौंका देती है। कक्षा में बच्चों को एक कहानी सुनाई गई जिसमें राजू नाम का एक बच्चा दो सेब लेकर आता है। उसकी बहिन मीना कहती है, मैं भी सेब खाऊँगी। राजू झट से एक सेब खाने लगता है। फिर झट से दूसरा सेब भी खाने लगता है। इसके बाद बच्चों से बातचीत की गई कि राजू ने झट से दूसरा सेब भी क्यों खाना शुरू किया होगा? यह कहानी 17 बच्चों को सुनाई गई थी, जिसमें अधिकतर बच्चों ने कहा कि राजू अपनी बहिन मीना को सेब नहीं देना चाहता था, किसी ने कहा, राजू भूखा था। इसी प्रकार के कुछ अन्य बच्चों के जवाब भी थे। किन्तु कक्षा 3 की एक बच्ची निकिता ने कहा कि राजू ये देखना चाहता था कि सेब मीठा है या खट्टा। अगर मीठा होता तभी अपनी बहिन को देता। यह सुनकर बाक़ी बच्चे आपस में कहने लगे, अरे हाँ! ऐसा भी हो सकता है। हमने तो ऐसा सोचा ही नहीं।


चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

कहानियों को अपने जीवन से जोड़कर भी बच्चे निष्कर्ष तक पहुँचते हैं। एक बार कक्षा में 'चिड़िया के बच्चे' कहानी सुनाई जिसमें गेहूँ के खेत में चिड़िया का घोंसला होता है। घोंसले में चिड़िया के दो बच्चे थे। एक दिन किसान अपने बेटे के साथ खेत में आकर अपने रिश्तेदारों से कहकर गेहूँ कटवाने की बात करता है। बच्चे भयभीत हो जाते हैं, क्योंकि वे अभी उड़ने लायक़ नहीं हुए थे। चिड़िया जब दाना लेकर वापस आती है तो बच्चे, किसान और उसके बेटे द्वारा कही बात अपनी माँ को बताते हैं। चिड़िया कहती है, चिन्ता मत करो अभी गेहूँ नहीं कटेंगे। ऐसे ही कुछ दिन बाद फिर किसान अपने गाँव वालों से कहकर, व कुछ दिन बाद पड़ोसियों से फ़सल कटवाने की बात कहता है। लेकिन चिड़िया कहती है कि अभी चिन्ता की बात नहीं, फ़सल अभी नहीं कटेगी। जब एक दिन किसान स्वयं आकर गेहूँ काटने की बात कहता है, तो चिड़िया अपने बच्चों से कहती है अब फ़सल कट जाएगी। अब तक बच्चे भी उड़ने लायक़ हो गए थे। चिड़िया बच्चों सहित उड़ जाती है। अगले दिन फ़सल भी कट जाती है। कहानी सुनाने के बाद बच्चों से पूछा गया कि चिड़िया को कैसे पता चला होगा कि गेहूँ अब कट जाएँगे? उस दिन बच्चों से अपेक्षित जवाब न मिल पाया किन्तु लगभग डेढ़ महीने बाद एक बच्ची नंदनी ने जवाब देकर चौंका ही दिया। पूछने पर उसने कहा, मेरी मम्मी को हमारे लिए कपड़े लेने बाज़ार जाना था। मम्मी को ताई के साथ जाना था लेकिन ताई एक हफ़्ते से हाँ कहतीं, पर जाती नहीं। फिर कल मेरी मम्मी ख़ुद ही कपड़े लेकर आ गईं, जैसा किसान ने ख़ुद

ही गेहूँ काटे थे। वह कहानी को अपने जीवन से जोड़कर उद्देश्य तक पहुँची। और यह भी कि कहानी इतने दिन बाद भी उसके ज़ेहन में थी।

बच्चे कहानी को अपने आसपास की घटनाओं और अनुभवों से जोड़कर देखते हैं इसका एक और वृतान्त साझा करना चाहूँगी।

एक दिन कक्षा 5 के छात्रों को पुस्तकालय की एक किताब से गड़रिए की कहानी पढ़कर सुना रही थी। उसी कमरे में कक्षा एक की दो छात्राएँ भी बैठी थीं। उन दोनों को मैंने अलग कार्य दिया हुआ था। जब मैंने कहानी पढ़कर पूरी की तो कक्षा 5 के बच्चों को कहानी को अपने शब्दों में लिखने को कहकर मैं उस किताब से कुछ अन्य कहानियाँ पढ़ने लगी। तभी कक्षा एक की बच्ची, जिसको अभी किताब पढ़ना नहीं आती थी, अपनी जगह से उठी, मेरे हाथ से किताब उठाई और अपनी सीट में जाकर उस किताब को शुरू से अन्त तक पलटती रही और उसके चित्र आदि देखती रही। किताब देखते-देखते कभी बीच-बीच में हल्के से मुस्कुरा देती तो कभी अपनी भौहें सिकोड़कर कुछ समझने का प्रयास करती। इस बीच मैं बिना कुछ बोले चुपचाप उसी को देख रही थी। पूरा पलटने के बाद वो फिर से उस किताब को मेरे पास रखकर चली गई। उसे ऐसा करते देखकर मुझे लगा कि शायद मेरे किताब से कहानी सुनाने और बाद में किताब को पढ़ते देख किताब पढ़ने की उसकी जिज्ञासा इतनी बढ़ गई होगी कि वो मेरे हाथ से ही किताब उठाकर ले गई। वह चित्रों को पढ़ने का प्रयास करती रही। जब उससे पूछा गया तो वह चित्र पढ़कर झट से बता देती। एक स्थान पर दौड़ती गाय का चित्र देखकर वह बोली कि बाघ के डर से गाय भाग रही है। 'भेड़िया आया' वाली कहानी में पेड़ देखा तो वह उसे आम का पेड़ बताकर कहने लगी, मैमजी, इस पेड़ पर बहुत सारे बन्दर रहते हैं। एक दिन शुभम ने आम तोड़ने के लिए पत्थर फेंका तो बन्दर ने नीचे आकर उसे थप्पड़ मारा और फिर से पेड़ पर चढ़ गया। उसने जो भी चित्र देखा उसे अपने परिवेश से जोड़कर देखा, और घटना को भी उससे जोड़ दिया।


चित्र : शिवेन्द्र पांडिया

इसी प्रकार बच्चे कहानियों को सुन-पढ़ कर भूल नहीं जाते बल्कि उन्हें अलग-अलग सन्दर्भों में अपने जीवन से जोड़कर देखते रहते हैं। हमें यही दृष्टि व जिज्ञासा तो पैदा करनी है छात्रों के अन्दर, ताकि किताबों में उनकी रुचि बढ़े, और उन्हें लगे कि किताबों के अन्दर बहुत कुछ आनन्द दायक है। कहानी इसका बहुत सुन्दर ज़रिया जान पड़ती है। लेकिन देखा गया कि कहानी सुनाने के बाद कहानी से मिलने वाली शिक्षा भी बच्चों को बता दी जाती है, ये जाने बग़ैर कि हर बच्चे का अपना अलग विचार, अलग दृष्टिकोण होता है। इसपर मुझे ख़लील जिब्रान की उक्ति याद आती है। उन्होंने बच्चों के बारे में कहा है, "तुम उन्हें प्यार दे सकते हो लेकिन विचार नहीं, क्योंकि उनके पास अपने विचार होते हैं।

तुम उनका शरीर पिंजड़े में बन्द कर सकते हो लेकिन उनकी आत्मा नहीं, क्योंकि उनकी आत्मा आने वाले कल में निवास करती है"। बाल मनोविज्ञान को उजागर करती यह बात आज भी उतनी ही प्रासंगिक है जितनी कि तब थी।

कहानी सुनना और पढ़ना इतना आनन्द दायक है कि हम बचपन में छुप-छुप कर कहानियाँ पढ़ते थे, क्योंकि तब कहानी पढ़ना समय की बर्बादी माना जाता था। कभी स्कूल में बस्ते से कहानी की किताब मिल जाने पर शिक्षकों से बहुत डाँट पड़ती थी लेकिन आज समय बदल चुका है। आज शिक्षक ख़ुद बच्चों को कहानियाँ पढ़ने को कहते हैं। कुछ शिक्षक बाल साहित्य के प्रति बहुत सजग हैं व बाल साहित्य का सृजन भी कर रहे हैं। शिक्षक बच्चों के बीच रहकर बाल मन व रुचियों को ज़्यादा बेहतर ढंग से समझ सकता है।

अनीता ध्यानी विगत ढाई दशक से शिक्षा में काम कर रही हैं। वे वर्तमान में राजकीय प्राथमिक विद्यालय देवराना, ज़िला पौड़ी, उत्तराखंड में प्रधानाध्यापिका हैं। वे प्राथमिक कक्षाओं में सभी विषय पढ़ाती हैं। उनकी कहानी, कविताएँ एवं लेख लिखने और हिन्दी भाषा शिक्षण में विशेष दिलचस्पी है। अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथ मिलकर आपने बच्चों के लिए बाल साहित्य मेलों का आयोजन किया है।

सम्पर्क : anudhyani929@gmail.com